कहानी

विकेश निझावन

# एक आसान होता सफर

बाबूजी आखिर आप भी चले ही गए। इस चुस्त–दरूस्त देह से लड़ते हुए आप भी हार गए। नहीं–नहीं आप हारे नहीं बाबूजी आप तो जीत गए। इस देह को तो आपने स्वयं ही छोड़ा होगा। अगर बात हारने वाली होती तो अम्मा के जाते ही आप भी कहीं टूट जाते। सोचा तो सभी ने यही था कि अम्मा के बाद आप स्वयं को कैसे संभाल पाएंगे। लेकिन आप ने ही कहा था – ईलाज करवाने में भला हमने कसर छोड़ी क्या□अब ऊपर वाले की जो मर्जी हो उसमें इन्सान क्या कर सकता है।

आपने तो दूसरों को भी ढाढ़स दिया था। सबसे हैरानी वाली बात तो यह थी कि अम्मा का चौथा होते ही आपने दुकान पर जाना शुरू कर दिया था। सबने रोका था– बाबूजी आप कुछ दिन आराम कर लेते।

आपने सभी को लगभग डपट लगाते हुए कहा था– तुम्हारी अम्मा ने भला कभी आराम करने दिया था मुझे□अब अगर इस तरह से तुम लोगों ने मुझे घर पर बिठा लिया तो देखना वह मुझसे ज़रूर कहेगी क्योंजी□मैं आपकी आंखों से ओझल क्या हुई आप तो अपनी मनमर्जी करने लगे। यों दुकान पर जाने से कतराने लगोगे तो गुजारा कैसे होगा□बेटों के मोहताज बनकर मत रहना जी। और फिर घर पर बैठे रहोगे तो जंग लग जाएगा।

आपने उस रोज सच में हद कर दी थी बाबूजी। अम्मा के अन्दाज़ में आपने यह भाषण दोहरा कर सभी को लोटपोट कर दिया था। हम सभी देर तक हंसते चले गए थे। लेकिन अजीब बात हुई उस बेतहाशा हंसी के बाद जब सभी चुप हो आए तो सभी की आंखें नम थीं। कहीं अम्मा की याद सभी को रूला गई थी।

उस रोज़ के बाद किसी ने आपको नहीं रोका था। आप पुनः अपनी पहले वाली दिनचर्या में व्यस्त हो गए थे। सबको अच्छा ही लगा था। और फिर बेटे

को अपने व्यवसाय में किसी एक की ज़रूरत तो थी ही  जो आप पहले से निबाह रहे थे।

सच तो यह है बाबूजी  यह बिज़नस आपके बेटे राज का नहीं आपका था। आपने बेटे को साथ लगा लिया था । दरअसल राज की पढ़ाई में जरा रूचि न थी। मैट्रिक में ही दो बार फेल हो गया था। यही सब देखते हुए आपने सोचा था  एक तो राज सेटल हो जाएगा  दूसरे आपको भी काम में थोड़ी मदद मिल जाएगी। कोई भी बाप शायद ऐसा ही सोच सकता है। लेकिन धीरे-धीरे सब कुछ बदल गया। यह बदलाव जैसे अपने आप होता चला गया। राज आपकी कुर्सी पर आ बैठा था और आप राज की कुर्सी पर। यह सब कैसे हुआ  पता ही न चला।

एक बात पूछूं बाबूजी  सच-सच बताना। क्या राज का आपकी कुर्सी पर आने से आपको कुछ भी महसूस नहीं हुआ□ जहां लोग आपको सलाम करते थे वहां राज को सलाम होने लगा। आपको राज से जरा भी ईर्श्या नहीं हुई□ आप जरा भी किसी हीन भावना के शिकार नहीं हुए□ आपको राज पर जरा भी क्रोध नहीं आया □ थोड़ा-बहुत गुस्सा या झल्लाहट ..... कुछ भी नहीं!

लेकिन याद है बाबूजी  एक रोज़ राज आप पर किस कद्र आग-बबूला हो आया था□ उस रोज राव साहब इन्सपैक्शन करने आ गए तो आप राज की कुर्सी पर बैठे हुए थे। राव साहब की अब तक राज से फोन पर ही बातचीत हो पाई थी। पहली बार सामने आते ही वे आपको राज समझ बैठे थे। बिना किसी परिचय के उन्होंने कुछ दो नम्बर के धंधे की बात शुरू कर दी तो आप जैसे फट ही पड़े थे।

कमाल है□ फोन पर तो आप खुद ही रिरिया रहे थे□ राव साहब ने भी तीर फैंका।

आप चौंके थे। लेकिन यह भी आपको समझते देर न लगी थी कि राज स्वयं ही इस काम को हाथ में लेना चाहता है।

राज के आने पर बजाए इसके कि आप उसे कुछ कहते  वह आप पर बरस पड़ा था- आखिर आपसे किसने कहा था कि आप मेरी कुर्सी पर बैठें। हो गया न कम से कम ढ़ाई लाख का नुकसान। मेरी समझ में आज तक यह नहीं आया बाबूजी कि आप कौन सी आदर्शवादिता अपने साथ चिपकाए  बैठे हैं।

बाबूजी यह बात सबको बहुत देर बाद पता चली। आपसे तो यह बात कभी पता ही नहीं चलनी थी। एक रोज़ शराब के नशे में धुत्त राज ने यह बात श्रुति से कह दी थी। और श्रुति के पेट में कोई बात हजम होना आसान नहीं था। उस रोज़ से आपके चेहरे पर एक थकान देखी थी मैंने। उस थकान ने आपके चेहरे पर कई आढ़ी-तिरछी लकीरें खींच दी थीं । दिन पर दिन वे लकीरें गहरी होती नजर आई थीं।

श्रुति भाभी की जुबान से लेकर जाने किस-किस की जुबान पर अब एक वाक्या रोज छूटने लगा था- बाबूजी हैं बड़े हिम्मती इतनी उम्र होने को आई अभी भी सुबह सवेरे चार-पांच मील की सैर ज़रूर करके आते हैं। और अब तक डाईट भी पूरी है। घी-मक्खन और नॉन वैज...। यह सब बाबूजी की तारीफ में कहा जाता था या उनकी इस सारी ताकत को बर्दाश्त न कर पाने के कारण...।

हाय राम अपने को तो सिम्पल रोटी भी हजम नहीं होती।

तुम तो धन्य हो श्रुति दिन-रात ससुर जी की सेवा करती हो। इन नकारे लोगों की सेवा करना भई मै तो कभी न कर पाऊं। जाने कितने हंसी-ठठे और तीखे नश्तर बाबूजी को सामने ही छोड़े जाने लगे थे।

उम्र अपंगता तो दिलाएगी जब उस बोझ का हम स्वांग रचने लगेंगे।

उस रोज आप दुकान पर नहीं जा सके थे। सुबह उठते ही आपने श्रुति से कहा था- बहु रात भर नींद नहीं आई। बेचैनी सी बनी रही। आज दुकान पर नहीं जा पाऊंगा। डाक्टर शुक्ला से फोन पर बात की है उसने कहा है - शूगर और बी. पी. चैक करा लूं।

कुछ काम-वाम नहीं करोगे तो यह सब होगा ही। अब तो सैर के लिए भी नहीं निकलते। निकलते हैं तो पन्द्रह मिनट में वापस। कहीं कोई वहम की बीमारी तो नहीं हो गई आपको कि आपके पीछे से इस घर का कुछ छूट न जाए।

हां बहु लगता तो कुछ ऐसा ही है। छुटता लगता ही नहीं छुटता देख रहा हूं। बुढ़ापे में असहाय हो जाना लगता है जीवन की यही एक सबसे बड़ी जलालत है। देख रहा हूं... कोई है जो मेरे भीतर से निकलकर इस घर के एक कोने

से भागता हुआ दूसरे कोने तक जा टकराता है। दीवारों से अपना सर फोड़ता है।...बस मैं ही उसे लहुलुहान होते देख रहा हूं।

हाय राम□जाने क्या-क्या बोले जा रहे हैं।कहीं कोई ओपरी कसर तो नहीं हो गई इन्हें।बहु चिल्लाई थी।

अरी उम्र है सठिया गए हैं। अब बर्दाश्त तो करना पड़ेगा।बेटे ने समझाया था।

बाबूजी ने सब सुना था। फिर हंस पड़े थे मन ही मन।

एक चित्रकार कोई चित्र बनाता है तो कितना सहेज कर रखता है।बरसों-बरसों तक उस चित्र से मोह बना रहता है।और जब उस चित्र के पन्ने पीले पड़ने लगते हैं रंग फीके होने लगते हैं उस चित्र के प्रति मोह अपने आप टूटने लगता है।और एक रोज़ उसे फाड़ कर तोड़-मरोड़ कर फेंक दिया जाता है या फिर जला दिया जाता है।फिर एक नए चित्र की कल्पना की जाती है।यही तो जीवन की परिभाषा है।बाबूजी इस जीवन का सार जान गए थे।

बिल्कुल उस पीले कागज़ की तरह आपको भी अग्नि के हवाले करने के लिए ले जाया जाने लगा।सभी रो रहे थे।आंसू बहा रहे थे।रूदन करने वालों में बहुओं का स्वर सबसे ऊंचा था।

गली से बाहर आने तक चार कंधे आपको सहारा दिए हुए थे।सड़क पर आते ही एक स्वर उभरा था- रूक जाइये□फ़यूनरल वैन आ रही है।इतनी गर्मी में पैदल जाएंगे क्या□

सबके चेहरों पर एक ताज़गी उभर आई।डेड-बॉडी फयूनरल वैन में रखते ही कुछ मर्द लोग उसमें उचक कर चढ़ गए।

फयूनरल वैन भाग रही थी।कुछ लोग अपनी कारों में फयूनरल वैन के पीछे भाग रहे थे।कुछ लोग स्कूटरों पर भी गए थे।शेष लोग वहीं से वापस होने का निर्णय ले बैठे थे।

बाबूजी एक गाना सुना करते थे सजन रे झूठ मत बोलो खुदा के पास जाना है न घोड़ा है न गाड़ी है वहां पैदल ही जाना है... लेकिन अब तो लगता

है बाबूजी  वहां पैदल नहीं  घोड़े या गाड़ी पर ही जाना है। कितना आसान हो गया है न  अब वहां का सफर□

–.....–

विकेश निझावन

मोबाईल– **09896100557**